विश्व पर्यावरण दिवस पर आचार्य प्रशांत ने ब्रिटेन के सर्वप्रतिष्ठित मंचों पर उठाया जलवायु संकट का मूल प्रश्न

IANS | June 5, 2026 10:15 PM

शेयर करें |

लंदन, 5 जून (आईएएनएस)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारतीय दार्शनिक और लेखक आचार्य प्रशांत इन दिनों ब्रिटेन के सर्वाधिक प्रतिष्ठित बौद्धिक और नीति-निर्माण मंचों पर एक ऐसा संदेश लेकर उपस्थित हैं जो वहां की परंपरागत पर्यावरण चर्चा से सर्वथा भिन्न है।

कैम्ब्रिज यूनियन में क्षमता तक भरे सभागारों को संबोधित करने से लेकर ब्रिटिश हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य के साथ एकल संवाद तक, और ब्रिटेन की आम जनता के बीच सार्वजनिक सत्रों से लेकर ऑक्सफोर्ड, लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स, किंग्स कॉलेज लंदन और लंदन क्लाइमेट एक्शन वीक तक आगामी कार्यक्रमों की एक लंबी श्रृंखला, यह दौरा हर पड़ाव पर एक ही बात कहता आया है: पर्यावरण संकट से निपटने का पश्चिमी तरीका काम नहीं किया है, और तब तक नहीं करेगा जब तक उस एकमात्र कारण को नहीं परखा जाता जो इस संकट को जन्म देता है।

30 मई को जब आचार्य प्रशांत कैम्ब्रिज यूनियन पहुंचे तो कार्यक्रम एक घंटे का था, परंतु हुआ कुछ और। कैम्ब्रिज जज बिजनेस स्कूल के सेंटर फॉर इंडिया एंड ग्लोबल बिजनेस के निदेशक प्रोफेसर जयदीप प्रभु के संचालन में हुई इस फायरसाइड चैट में अर्थशास्त्रियों, एमबीए छात्रों, व्यापार जगत के विद्वानों और नीति-निर्माताओं से भरे सभागार ने प्रश्नों का ऐसा सिलसिला शुरू किया जो थमने का नाम नहीं लेता था। एक प्रश्न दूसरे को जन्म देता, दूसरा तीसरे को, और जो एक सत्र के रूप में आरंभ हुआ था वह दो दिनों में लगभग तीन सत्रों तक खिंच गया।

कैम्ब्रिज इंडिया बिजनेस डायलॉग, जिसे कैम्ब्रिज जज बिजनेस स्कूल आयोजित करता है, भारत और ब्रिटेन के व्यापार, नीति और शिक्षा जगत की शीर्ष हस्तियों को एक मंच पर लाता है। इस बार के संस्करण में एक भारतीय दार्शनिक की फायरसाइड चैट को केंद्रीय स्थान मिलना इस बात का संकेत है कि वैश्विक नीति-कक्षों में उठने वाले प्रश्न अब केवल तकनीकी नहीं रहे। 1 जून को एनआईएसएयू यानी नेशनल इंडियन स्टूडेंट्स एंड अलुमनाई यूनियन यूके, द्वारा आयोजित एक संचालित संवाद में आचार्य प्रशांत ने लॉर्ड क्रिश रावल के साथ भाग लिया। लॉर्ड रावल जनवरी 2025 में हाउस ऑफ लॉर्ड्स में नियुक्त आजीवन सदस्य और फेथ इन लीडरशिप के संस्थापक-निदेशक हैं, और ब्रिटिश सार्वजनिक जीवन में ब्रिटिश भारतीय समुदाय की सबसे प्रमुख आवाजों में से एक हैं। दोनों के बीच जलवायु और पर्यावरण संकट के कई पहलुओं पर गहन चर्चा हुई, जिसे ब्रिटेन भर से आए श्रोताओं ने देखा।

संस्थागत आयोजनों के साथ-साथ आचार्य प्रशांत ने ब्रिटेन में सार्वजनिक सत्र भी आयोजित किए हैं जिनमें केवल भारतीय मूल के लोग ही नहीं, बल्कि ब्रिटेन की व्यापक जनता भी बड़ी संख्या में शामिल हुई। मिडिलसेक्स यूनिवर्सिटी लंदन में हुए इन सार्वजनिक

ताजा खबरें

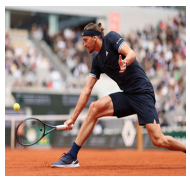
फ्रेंच ओपन: अलेक्जेंडर ज्वेरेव और फ्लेवियो कोबोली ...
June 5, 2026

हिंदी सिनेमा के दिग्गज फनकार राजेंद्र कृष्ण ने संगीत जगत को दि...
June 5, 2026

'जो पर्यावरण के साथ हो रहा है, वही हमारे साथ भी हो रहा', दी...
June 5, 2026

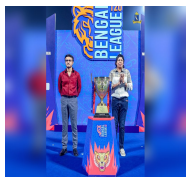
कैब अध्यक्ष सौरव गांगुली की मौजूदगी में बंगाल टी20 लीग ...
June 5, 2026

प्रधानमंत्री के दमन पहुंचने पर स्थानीय लोगों में दिखा उत्सा...
June 5, 2026

दमन को विकास परियोजनाओं की मिली सौगात, पीएम...
June 5, 2026

लॉर्ड्स टेस्ट: इंग्लैंड की दूसरी पारी 226 रन पर सिमटी, जीत के लि...
June 5, 2026

सूरत की जनता ने प्रधानमंत्री का जताया आभार, कहा- उनका...
June 5, 2026

विश्व पर्यावरण दिवस पर आचार्य प्रशांत ने ब्रिटेन के सर्वप्रतिष्ठि...
June 5, 2026

गुरबचन सिंह रंधावा: 'ट्रैक एंड फील्ड' में अर्जुन पुरस्कार पाने...
June 5, 2026

व्याख्यानों में विभिन्न पृष्ठभूमियों के श्रोता एकत्र हुए, जो ब्रिटेन में उनके कार्य के प्रति उत्पन्न हुई व्यापक जिज्ञासा को दर्शाता है। चाहे संस्थागत मंच हो या सार्वजनिक सत्र, हर जगह एक ही चित्र उभरा है: सभागार भरे हुए, सत्र निर्धारित समय से आगे बढ़ते हुए, और छात्रों, शिक्षाविदों, पेशेवरों, नीति-निर्माताओं तथा आम जन से मिलकर बना श्रोतावर्ग। उनका कार्य पहले से ही 100 से अधिक देशों में अपने श्रोताओं तक पहुंचता है; ब्रिटेन की जनता की यह प्रतिक्रिया उस वैश्विक उपस्थिति को विश्व के सर्वाधिक चर्चित बौद्धिक केंद्रों में से एक में सामने ला रही है।

आगामी कार्यक्रम भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। ऑक्सफोर्ड, लंदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स और किंग्स कॉलेज लंदन, तीनों वैश्विक बौद्धिक और नीति-प्रभाव के अलग-अलग केंद्र हैं, और तीनों ने जलवायु विषय पर केंद्रित सत्रों के लिए आमंत्रण दिया है। इनके अतिरिक्त लंदन क्लाइमेट एक्शन वीक में भी एक सत्र निर्धारित है, जो यूरोप का सबसे बड़ा स्वतंत्र जलवायु सम्मेलन है और जिसमें दुनिया भर के नीति-निर्माता, वैज्ञानिक, व्यापार जगत के नेता और नागरिक समाज के प्रतिनिधि एकत्र होते हैं। कैम्ब्रिज यूनियन से आरंभ होकर हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य के साथ संवाद, ब्रिटेन के शहरों में सार्वजनिक सत्र, और आगे ऑक्सफोर्ड, एलएसई, किंग्स कॉलेज लंदन तथा महाद्वीप के सर्वप्रमुख जलवायु नीति सम्मेलन तक, हर मंच पर एक ही तर्क लेकर चलते हुए किसी भी वक्ता के लिए ऐसी यात्रा विरल ही होती है।

हर मंच पर उन्होंने जो जलवायु तर्क प्रस्तुत किया है, वह एक सरल किंतु असुविधाजनक तथ्य से आरंभ होता है। 1992 में रियो दे जेनेरियो में अपनाए गए समझौते के बाद से अब तक तीस कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज हो चुके हैं और वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड बिना रुके बढ़ती रही है। कैम्ब्रिज के भरे सभागार में उन्होंने कहा, "बाहर से हम इतिहास के किसी भी काल की तुलना में अधिक समृद्ध और शक्तिशाली हैं। भीतर से हम अभी भी लगभग आदिमानव हैं।" सभ्यता के पास उपलब्ध साधन अपरिमित रूप से बढ़ चुके हैं, किंतु उन साधनों को चलाने वाली कामना की कभी परीक्षा नहीं हुई। रुकने के लिए समय नहीं चाहिए, उन्होंने कहा, "समय तो पहुंचने के लिए चाहिए, दौड़ने के लिए चाहिए। तीन दशकों के जलवायु सम्मेलन तेज दौड़ने के अभ्यास रहे हैं, जबकि संकट की आंतरिक जड़ अछूती बनी रही।"

इन मंचों पर श्रोताओं को जो बात खींचती है वह केवल यह तर्क नहीं है, बल्कि उसके पीछे खड़े कार्य की व्यापकता भी है। आचार्य प्रशांत का गीता मिशन 100 से अधिक देशों में डेढ़ लाख से अधिक नामांकित छात्रों तक पहुंचता है, जो प्रतिदिन उपनिषदों, भगवद्गीता और अन्य दार्शनिक परंपराओं पर आधारित एक संरचित, परीक्षा-युक्त कार्यक्रम के माध्यम से अध्ययन करते हैं। यह कार्यक्रम किसी विशिष्ट वर्ग के लिए नहीं, बल्कि व्यापक आंतरिक शिक्षा के रूप में परिकल्पित है। उनके डिजिटल माध्यम इस पहुंच को और विस्तार देते हैं। इसी व्यापक पहुंच और संस्थागत स्वीकृति का संयोग है जिसने उनके यूके दौरे को ब्रिटेन के विभिन्न समुदायों में ध्यान का केंद्र बनाया है।

आचार्य प्रशांत आईआईटी दिल्ली और आईआईएम अहमदाबाद के पूर्व छात्र और प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन के संस्थापक हैं। अगस्त 2025 से अप्रैल 2026 के बीच उन्होंने भारत के 18 शहरों में 200 से अधिक सत्र आयोजित किए, जिनमें 12 से अधिक आईआईटी परिसरों, आईआईएससी बेंगलुरु, आईआईएम लखनऊ, आईआईएम बेंगलुरु और बीआईटीएस पिलानी सहित अनेक संस्थानों के छात्रों को संबोधित किया। उनकी पुस्तक ट्रुथ विदाउट अपॉलजी, हार्परकॉलिन्स द्वारा प्रकाशित, और द पायनियर, डेक्कन हेराल्ड तथा द संडे गार्जियन में उनके साप्ताहिक स्तंभ इसी विचार को मुख्यधारा के सार्वजनिक जीवन तक पहुंचाते हैं। वॉटकिन्स माइंड बॉडी स्पिरिट सूची 2026 में उन्हें विश्व के शीर्ष 100 आध्यात्मिक रूप से प्रभावशाली व्यक्तियों में 20वां स्थान प्राप्त हुआ।

विश्व पर्यावरण दिवस पर आचार्य प्रशांत इस दौरे के मध्य में हैं, आगे और कार्यक्रम प्रतीक्षा में हैं, और कैम्ब्रिज में जो संवाद आरंभ हुआ था, वह अभी जारी है।

--आईएएनएस

एबीएम/

↑